एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (अप्रैल, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

आलू का पछेती झुलसा रोग: कारण एवं रोकथाम

डॉ. मेघा शर्मा[1] एवं *प्रज्ञा श्रेष्ठ[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, कृषि संकाय, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2]छात्रा, बी.एस.सी. (ऑनर्स) कृषि, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: pragyashresth22@gmail.com

आलू का पछेती झुलसा रोग एक अत्यंत विनाशकारी रोग है, जो बहुत कम समय में पूरी फसल को नष्ट कर सकता है। यह रोग विशेष रूप से ठंडी और आर्द्र जलवायु में तेजी से फैलता है तथा उत्पादन और गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करता है।

कारण

इस रोग का मुख्य कारण एक फफूंद सदृश जीव है जिसे फाइटोफ्थोरा इन्फेस्टान्स कहा जाता है।
रोग फैलने के प्रमुख कारण
ठंडा और नम वातावरण
लगभग 10 से 24 डिग्री तापमान और अधिक नमी रोग के लिए अनुकूल होती है।
संक्रमित बीज कंद
रोगग्रस्त कंद लगाने से रोग तेजी से फैलता है।
हवा और पानी द्वारा फैलाव
इसके सूक्ष्म कण हवा, वर्षा और सिंचाई के पानी से फैलते हैं।
मिट्टी में जीव का बने रहना
यह जीव मिट्टी में कुछ समय तक जीवित रह सकता है।
संवेदनशील किस्मों का प्रयोग
कुछ किस्में इस रोग के प्रति अधिक जल्दी प्रभावित होती हैं।

लक्षण

पत्तियों पर भूरे या काले धब्बे दिखाई देते हैं।
पत्तियाँ पीली होकर सूखने लगती हैं।
तनों पर भी काले धब्बे बनते हैं।
कंदों में सड़न उत्पन्न हो जाती है।
अधिक नमी में पत्तियों के नीचे सफेद रूई जैसे धब्बे दिखाई देते हैं।

रोकथाम एवं नियंत्रण

1. कृषि संबंधी उपाय
स्वस्थ और रोगमुक्त बीज का उपयोग करें।
फसल चक्र अपनाएँ।
खेत को साफ रखें।
पौधों के बीच उचित दूरी बनाए रखें।
2. प्रतिरोधी किस्मों का चयन
ऐसी किस्में लगाएँ जो इस रोग को सहन कर सकें।
3. रासायनिक नियंत्रण
समय पर कवकनाशी दवाओं का छिड़काव करें, जैसे

मैन्कोज़ेब
साइमोक्सानिल
एजॉक्सीस्ट्रोबिन + टेबुकोनाजोल
4. जैविक उपाय
लाभकारी जीव जैसे ट्राइकोडर्मा और बैसिलस का उपयोग किया जा सकता है।
5. सिंचाई प्रबंधन
खेत में पानी का जमाव न होने दें।
आवश्यकतानुसार ही सिंचाई करें।

निष्कर्ष

आलू का पछेती झुलसा रोग बहुत तेजी से फैलने वाला और खतरनाक रोग है। यदि समय पर ध्यान नहीं दिया जाए तो यह पूरी फसल को नष्ट कर सकता है। इसलिए सही समय पर पहचान और उचित नियंत्रण उपाय अपनाना अत्यंत आवश्यक है।